प्रजातंत्र

प्रजातंत्र आधुनिक समय की सर्वोत्तम शासन-व्यवस्था है। यह जनता द्वारा जनता के लिए जनता का शासन है। राजनीति विज्ञान के अंतर्गत प्रजातन्त्र पर जितने-जितने वृहत साहित्य का निर्माण हुआ है, उतना शायद ही किसी अन्य विषय पर। राजनीति विज्ञान के विद्वानों ने जितने जोरदार शब्दों में इसकी प्रशंसा की है, उतने ही जोरदार शब्दों में आलोचकों ने इसकी आलोचना एवं निंदा भी की है। प्लेटो अरस्तू वाल्टो हार्नितो ने इसे भीड़ तन्त्र भी कहा है उनका मत है कि लोकतन्त्र का अर्थ उत्तरदायी भीड़ का शासन है। दूसरी ओर कुछ विद्वानों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है तथा इसे समस्त राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक रोगों का रामबाण बतलाया है। वेन्थम ने इसे सर्वोत्तम शासन तथा मील ने इसे उत्तम शासन एवं जनता के चरित्र निर्माण की दृष्टि से प्रजातंत्र ही सर्वोपरि है। जो विचारक विचारक प्रजातंत्र को अच्छी शासन व्यवस्था के रूप में मानते हैं वे अपने मत के समर्थन में

निम्नलिखित तत्व होते है—

① जनमत पर आधारित शासन —
प्रजातंत्र जनमत पर आधारित शासन है यह जनता की सरकार होती है तथा जनता की सामान्य इच्छा से इसका संचालन होता है। जनता अपना प्रतिनिधि चुनती है जो जनता की इच्छानुसार कानून बनाती है और देश का शासन करती है। यहाँ शासक जनता के प्रतिनिधि होते है और जनता की भलाई की चेष्टा करती है तथा जनता भी अपनी प्रतिनिधियों से भलाई की आशा रखती है।

② स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व के आदर्श पर आधारित शासन —

प्रजातंत्र की दूसरी विशेषता यह है कि यह स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व के आदर्श पर आधारित शासन है। इस शासन में जाति, वर्ग, ऊँच-नीच आदि पर भेद नही किया जाता है। कानून की दृष्टि में सभी नागरिक बराबर होते है और सबको विकास के लिए समान अवसर प्रदान किया जाता है। ~~इसे~~ सभी को मत देने का अधिकार तथा चुनाव लड़ने

या सक्षम सरकारी पद ग्रहण करने का अवसर मिलता है। प्रजातंत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा होती है

③ व्यक्तियों का विकास —
प्रजातंत्र में व्यक्तियों के चरित्र एवं व्यक्तित्व का विकास संभव है। इसमें नागरिकों के बौद्धिक एवं मानसिक गुणों का विकास होता है यह एक ऐसे मूल्यों की स्थापना करता है जिनसे व्यवस्था की स्थापना सुरक्षा की रक्षा, शारीरिक सुख-सुविधा की प्राप्ति, शिक्षा एवं सांस्कृति साधनों की प्राप्ति आदि लक्ष्यों की प्राप्ति में आसानी होती है। निरंकुश शासन तथा नौकरशाही में समाज के कुछ भाग उदासीन हो जाते हैं। जबकि लोकतंत्र अपने सभी सदस्यों को बुद्धि एवं शक्ति का प्रयोग करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

④ सार्वजनिक कल्याण की अभिवृद्धि

प्रजातंत्र जनता की सरकार है और इसलिये इसका उद्देश्य जन-कल्याण होता है इस शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत अधिक से अधिक मनुष्यों की ओर अधिक से

अधिक हित संभव है तथा प्रमुख शासन के राजनीतिक कार्यों की आंतरिक तथा बाहरी शत्रुओं से रक्षा करना, विवादों का निर्णय करना, शिक्षा की व्यवस्था करना तथा अन्य सामान्य सेवा तथा आवश्यक सेवाओं की व्यवस्था इत्यादि करना

(5) सार्वजनिक प्रशिक्षण — प्रजातन्त्र में नागरिकों को राजनीतिक प्रशिक्षण मिलता है गेटेल महोदय का कहना है कि — "प्रजातंत्र नागरिकों के प्रशिक्षण के लिए विद्यालय का काम करता है आम चुनाव के समय विभिन्न राजनीतिक दल अपने अपने कार्यक्रमों द्वारा जनता को देश के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं की ओर ध्यान खिंचाते हैं और उन समस्याओं के समाधान का तरीका भी रखती है। फिर चुनाव में जनता को मतदान करने एवं स्वयं निर्वाचित होने का मौका मिलता है, इससे जनता राजनीतिक दृष्टि से जाग्रत रहती है। जिस कारण व्यक्ति में सहनशीलता, सद्भावना, सहानुभूति आत्मविश्वास, उदारता आदि का विकास होता है।

(c) उपर्युक्त गुणों के बावजूद प्रजातंत्र के विरुद्ध आलोचकों द्वारा अनेक तर्क दिये गये हैं जो निम्नलिखित इस प्रकार है।

(i) अयोग्यता की पूजा होती है—

एच. जी. वेल्स ने प्रजातंत्र को बुद्धिहीन तथा अज्ञानियों का शासन कहा है लेटो ने इसे अज्ञानता का राज्य बतलाया है। प्रजातंत्र जनता का शासन होता है। किसी भी देश में अधिकांश जनता अज्ञानी एवं मूर्ख होती है। और इसीलिए यह मूर्खों एवं अज्ञानियों का शासन है। परिणामस्वरूप शासन अयोग्य व्यक्तियों के हाथों में चला जाता है जो अधिकतर जोशीले भाषण एवं झूठे वादे करने में सफल होते हैं इस प्रकार प्रजातंत्र में दुर्जन नेता, आन्दोलनकर्ता एवं अधिपति लोग ही सब कुछ बन जाते हैं।

(ii) कुछ आलोचकों का मत है की लोकतंत्र में सत्ता जनता को प्रभावित करने वाले व्यक्तियों, दाव पेश करनेवाले पार्टियों तथा नेताओं

के हाथों में रहती है तथा उच्चकोटि के नेता नहीं चुने जाते। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अनेक उच्च कोटि के व्यक्तियों को जनता ने अस्वीकार कर दिया तथा निम्न कोटि के व्यक्तियों को चुन लिया। जो अपने को लोकप्रिय बनाने में चतुर है। इस प्रकार लोकतंत्र उथल राजनीति का शिकार हो जाता है।

(3) समय तथा धन का अपव्यय — प्रजातंत्र में समय तथा धन का अपव्यय होता है, क्योंकि एक कानून बनाने में विधान सभाएँ महीनों ले लेती है। ऐसी सरकार को खर्चीली सरकार बताया जाता है। जनता के हजारों प्रतिनिधि होते हैं जिन्हें सरकार को वेतन एवं भत्ता देने पड़ते हैं। चुनाव पद्धति के कारण प्रत्येक चार या पाँच साल पर चुनाव कराने में देश का करोड़ों रुपया बर्बाद हो जाता है।

(4) लोकतंत्र के विरोध में यह भी तर्क दिया जाता है कि यह शिक्षा की बजाय अशिक्षा या कुशिक्षा का साधन है इसमें जनता भीड़ मनोवृत्ति तथा जनता की ~~बुरी~~ प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया जाता है।

ओके

(5) अनैतिक शासन —

आलोचकों का कहना है कि चुनाव के समय उम्मीदवार विजयी होने के लिए बहुत से अनैतिक एवं हथकंडे अपनाते हैं जिनका जनता के चरित्र पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। और प्रजातन्त्र की सरकारें बदलती रहती हैं इसलिए स्थायी नीति अपनाना सरकार के लिए कठिन-सा हो जाता है फलस्वरूप भविष्य के लिए योजना-निर्माण में कठिनाई होती है।

इस प्रकार प्रजातन्त्र में अनेक दोष हैं प्रजातन्त्र की कुछ आवश्यक शर्तें हैं तथा जिनमें कुछ शर्तों का भारतीय लोकतंत्र में अभाव है। जिसके कारण भारतीय लोकतन्त्र का पौधा अपनी जड़ें नहीं जमा पाया है तथा जिसका कारण यहाँ - अशिक्षा, गरीबी, आर्थिक विषमता, सच्चरित्रता का अभाव इत्यादि है।

— X —